ई–गन्ना एप बना किसानो के चहुमुखी विकास में संजीवनी

उत्तर प्रदेश के गन्ना विभाग ने गन्ना किसानों की सुविधा व गन्ने की विक्री में पारदर्शिता हेतु "ई गन्ना ऐप" (E-Ganna App) और Ganna Kisan net Portal शुरू किया है। यूपी के समस्त किसान गन्ना पर्ची कलेंडर caneup-in या "ई गन्ना ऐप" E-Ganna App से देख सकते हैं।

उत्तर प्रदेश के अपर मुख्य सचिव, श्री संजय आर. भूसरेड्डी (चीनी उधोग एवं गन्ना विकास विभाग, उत्तर प्रदेश साशन) के निर्देषानुसार समस्त किसानों को पेपर लेस कार्य करने हेतु गन्ना आपूर्ति की तिथि एवं पर्ची संख्या उनके पंजीकृत मोबाइल पर सन्देश के जरिये भेजी जाती है तथा तुली हुई पर्ची का वजन भी उनको मोबाइल पर ही भेज दिया जाता है। इसके साथ साथ इन सभी कार्यों को सुगम एवं पारदर्शी बनाने हेतु यह ऐप बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है।

यूपी के गन्ना उत्पादक किसान अपने गन्ने की विक्री हेतु पर्ची कलेंडर व अपने सट्टे से जुड़ी सारी जानकारी caneup-in web portal या "ई गन्ना ऐप" (E-Ganna App) Download करके मोबाइल के जरिए पता कर सकते हैं। मोबाइल पर किसान अपने गन्ने की पर्चियों के अलावा पिछले सालों के गन्ना आपूर्ति की जानकारी भी ले सकते हैं। इससे किसानों को कोई काम होने पर गन्ना विभाग या शुगर मिल के चक्कर नहीं काटने होते।

गन्ने का इतिहास

गन्ने का मूल स्थान भारतवर्ष है। पौराणिक कथाओं तथा भारत के प्राचीन ग्रन्थों में गन्ना व इससे तैयार वस्तुओं का उल्लेख पाया गया है। विश्व के मध्य पूर्वी देशों सहित अनेक स्थानों में भारत से ही इस उपयोगी पौधे को ले जाया गया। प्राचीन काल से गन्ना भारत में गुड़ तथा राब बनाने के काम आता था।

उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में जावा, हवाई, आस्ट्रेलिया आदि देशों में जब सफ़ेद दानेदार चीनी का उद्योग सफलतापूर्वक चल रहा था। भारतवर्ष में नील का व्यवसाय उन्नति पर था जो जर्मनी में रंग बनाने की नई तकनीक विकसित होने पर मन्द पड़ गया।

इस परिस्थिति का लाभ भारत में चीनी उद्योग की स्थापना को मिला। सन् 1920 में भारत के तत्कालीन गर्वनर जनरल ने चीनी व्यवसाय की उज्जवल भविष्य की कल्पना करते हुए इण्डियन शुगर कमेटी की स्थापना की थी। वर्ष 1930 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की गन्ना उप समिति की सिफारिश पर एक 'टैरिफ बोर्ड' की स्थापना की गयी। जिसने भारत सरकार से चीनी उद्योग को आरम्भ में 15 वर्षों के लिये संरक्षण देने की सिफारिश की, फलतः भारत में सन् 1931 में चीनी उद्योग को संरक्षण प्रदान किया गया।

उत्तर प्रदेश में यद्यपि देवरिया के प्रतापपुर नामक स्थान पर 1903 में ही भारत की प्रथम प्राचीनत् चीनी मिल स्थापित हो चुकी थी। परन्तु गन्ना क्रय–विक्रय की कोई संस्थापित पद्धति के अभाव में गन्ना किसानों को अनेकों कठिनाईयाँ होती थीं। भारत सरकार द्वारा पारित शुगर केन एक्ट 1934 द्वारा प्रदेशीय सरकारों को किसी क्षेत्र को नियंत्रित करते हुये वैक्यूम पैन चीनी मिलों द्वारा प्रयुक्त होने वाले गन्ने के न्यूनतम मूल्य निर्धारित करने के लिये अधिकृत किया गया।

उत्तर प्रदेश में सन् 1935 में गन्ना विकास विभाग स्थापित हुआ। सरकार ने गन्ना कृषकों की मदद की दृष्टि से 'शुगर फैक्ट्रीज़ कन्ट्रोल एक्ट 1938' लागू किया। वर्ष 1953–54 में इसके स्थान पर 'उ0 प्र0 गन्ना पूर्ति एवं खरीद विनियमन अधिनियम 1953' लागू हुआ।

ई–गन्ना ऐप– आज यह विदित है कि स्मार्ट फोन का प्रयोग लगभग सभी गाँव में बहुतायत मात्रा में हो रहा है। जिससे सभी स्मार्ट फ़ोन के उपयोगकर्ताओं को विभिन्न तकनीकी जानकारियां उनको मिलती रहती हैं। ई–गन्ना ऐप भी इन्ही तकनीकियों में से एक है। इस ऐप के माध्यम से सभी किसान अपने गन्ने की सम्पूर्ण जानकारी अपने घर खेत अर्थात् वो कहीं भी और कभी भी प्राप्त कर सकते हैं। जिसके लिए उनको कहीं भी जाने और किसी भी कार्यालय के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है। इस ऐप के माध्यम से समस्त किसान वन्धु अपने गन्ने की पिछले पांच वर्षों की आपूर्ति, गन्ना सर्वेक्षण, गन्ना पर्चियों की संख्या, चीनी मिल में वर्तमान चल रहे पक्ष एवं कॉलम की भी जानकारी ले सकते हैं। वर्तमान सत्र में आपूर्ति की स्थिति एवं भुगतान की स्थिति भी जान सकते हैं।

ई–गन्ना ऐप की विशेषताएं

1. **भाषा बदलना**: ई–गन्ना ऐप को सुगम बनाने में यह विकल्प बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस विकल्प में समस्त किसान अपनी सुविधानुसार ऐप की भाषा को बदल सकते हैं और सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
2. **नए किसान जोड़ना**: इस ऐप में किसान वन्धु अपने सट्टे की जानकारी के साथ साथ अन्य किसानों को जोड़ सकते हैं। जिनके पास स्मार्ट फ़ोन न हो उनको भी एक ही ऐप में जोड़कर उनकी भी जानकारी उनको दे सकते हैं।
3. **जानकारी देखना**: इस विकल्प को चुनकर किसान के नाम और उनके पिता के नाम स्क्रीन पर दिखाई देते हैं। हमें जिस किसान की जानकारी प्राप्त करनी होती है, उनके नाम पर क्लिक करना होता है। फिर उस किसान की सम्पूर्ण जानकारी स्क्रीन पर दिखाई देने लगती है। जैसे– कैलेंडर

(मुख्य एवं अतिरिक्त कैलेंडर), रसीद (पर्चियों का व्यौरा), गन्ना तौल (अंतिम तौल तिथि एवं वजन, कुल गन्ना आपूर्ति), भुगतान (कुल भुगतान राशि एवं बैंक की जानकारी जिसमें भुगतान गया) इत्यादि।

4. **मोबाइल नंबर बदलना:** किसान भाई इस विकल्प में जाकर बिना किसी कार्यालय एवं बिना किसी प्रार्थना पत्र के वे अपने घर अथवा खेत कहीं भी एवं कभी भी वो अपना मोबाइल नंबर बदल सकते हैं।

5. **अन्य विकल्प:** अन्य विकल्पों में किसान को बदलना, रिफ्रेश करना, पिछले वर्ष के आंकड़े देखना, मोबाइल नंबर बदलना, तकनिकी सहायता हेतु संपर्क करना, प्रतिक्रिया देना, एवं ई गन्ना ऐप के बारे में जानकारी लेना इत्यादि।

परिणामस्वरूप समस्त गन्ना किसान, गन्ना विभाग के पुराने नियम एवं कानूनों की तुलना में अब बहुत ही संतुष्ट हैं। अब उन्हें किसी भी दफ्तर (कार्यालयों) के चक्कर नहीं लगाने पड़ते एवं निर्गत पर्चियों को प्राप्त करने के लिए उनको किसी से पूछना नहीं पड़ता। अतः यह ई गन्ना ऐप गन्ना किसानों के लिए सारथी का काम करता है।

– अमित कुमार सिंह
(विषय वस्तु विषेशज्ञ–कृषि प्रसार)
कृषि विज्ञान केन्द्र, चन्दौली, अचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

ड्रैगन फ्रूट की खेती एवं उससे होने वाले फायदे

ड्रैगन फ्रूट का वैज्ञानिक नाम हिलोकेरेस अंडटस है। यह दक्षिण अमेरिका में पाया जाता है। यह एक किस्म की बेल पर लगने वाला फल है, जो कैक्टेसिया फैमिली से संबंधित है। इसके तने गूदेदार और रसीले होते हैं। इस फल में खास बात यह है कि इसके फूल बहुत ही सुगंधित होते हैं, जो रात में ही खिलते हैं और सुबह होने तक झड़ जाते हैं। ड्रैगन फ्रूट एक ऐसा फल है जिसमें भरपूर पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसे खाने से इम्युनिटी मजबूत होती है साथ ही कई बिमारियों से लड़ने में भी मदद मिलती है। इसलिए इसे पोषक तत्व का पावर हाउस भी कहा जाता है। ड्रैगन फ्रूट में एंटी–ऑक्सिडेंटस, विटामिन–सी और भरपूर मात्रा में फाइबर पाया जाता है। डायबिटीज, हार्ट और कैंसर जैसी बिमारीयों से लड़ने में ये फल आपकी काफी मद्दत करता है। ड्रैगन फ्रूट में लायकोपीन और बीटा कैरोटीन होता है जिससे कैंसर और हार्ट जैसी बिमारियों का खतरा कम होता है। इस फ्रूट की खास बात ये है कि कोरोना काल में (ड्रैगन फ्रूट) आपकी इम्यूनिटी को मजबूत बनाता है। इसमें भरपूर आयरन होता है और पाचन भी ठीक रखता है।

तापमान और मानसून

ड्रैगन फ्रूट के लिए ज्यादा बारिश की जरुरत नहीं होती है। वहीं अगर मिट्टी की गुणवत्ता भी ज्यादा अच्छी नहीं हो तो भी यह फल अच्छी तरह से उग जाता है। एक साल में 50 सेंटीमीटर की बारिश और 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान होना चाहिए। इसकी खेती के लिए ज्यादा धूप की भी आवश्यकता नही होती है। ऐसे में यह जरुरी है कि आप शेड का इस्तेमाल जरुर करें जिससे फल की खेती अच्छी तरह से हो सके।

ड्रैगन फ्रूट के लिए मिट्टी कैसी हो ?

अगर आप अपने खेत में ड्रैगन फ्रूट की खेती करने की सोच रहें हैं तो आपकी मिट्टी 5.5 से 7 पी.एच. अच्छे कार्बनिक पदार्थ रेतीली मिट्टी इसकी खेती के लिए सबसे अच्छी होती है। यूँ तो ड्रैगन फ्रूट की खेती आप किसी भी इलाके में कर सकते हैं लेकिन सबसे ज्यादा खेती गुजरात के कुछ इलाकों और राजस्थान में होती है। वहीं तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक जैसे राज्यों में भी बडी संख्या में किसान ड्रैगन फ्रूटस की खेती करते हैं।

एक हैक्टेयर में कितने पौधे लगते है ?

ड्रैगन फ्रूट एक सीजन में कम से कम तीन बार फल देता ही है। एक फल का वजन आमतौर पर 400 ग्राम तक होता है। एक पौधे को लगाने के बाद पहले साल से ही आपको ड्रैगन फ्रूट का फल मिलने लगेगा। मई जून महीने में इसमें फूल आते हैं और फिर दिसम्बर महीने में फल लगने शुरू हो जाते हैं। आमतौर पर दो ड्रैगन फ्रूटस के बीच की दूरी दो मीटर होनी चाहिए। एक हैक्टेयर जमीन पर तकरीबन पौधे आसानी से लगाए जा सकते है। शुरूआती समय में आप इन पौधों को किसी लकड़ी या फिर लोहे की छड़ी की मद्द से बढ़ने से सहारा दे सकते है। पौधों को 50 सेंमी0 × 50 सेंमी0 × 50 सेंमी0 के गड्ढों में ही लगाएं, जिससे वह अच्छी तरह से बडा हो सके।

ड्रैगन फ्रूट की किस्में

मध्य अमेरिका और मैक्सिको के मूल निवासी ड्रैगन फ्रूट में बीज के साथ एक मीठा गूदा होता है। इसमें कीवी और नाशपाती के मिश्रण के समान एक कुरकरे बनावट है। यहां सबसे अच्छे प्रकार के ड्रैगन फ्रूट हैं जिन्हें आप और हम भारत में भी उगा सकते हैं।

1. हिलोसेरियस अंडटस इसे पिटाया ब्लैंका, सफेद मांसल पिटाया के रूप में भी जाना जाता है। इस ड्रैगन फ्रूट किस्म में गुलाबी त्वचा, काले बीज और सफेद गुदा होता है।
2. हायलोसेरस पॉलीरिजस इसे लाल पिथया के नाम से भी जाना जाता है यह किस्म मैक्सिको की मूल निवासी है, लेकिन इसकी खेती अब कई देशों में की जाती है।